कौशल शिक्षा की परिवर्तनकारी गतिशीलता पर राष्ट्रीय सम्मेलन

पलवल,23 सितम्बर (नवोदय टाइम्स) : तकनीकी और कौशल शिक्षा की परिवर्तनकारी गतिशीलता पर श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय और विज्ञान भारती के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय स्तर का सम्मेलन आयोजित किया गया।

इस सम्मेलन में विभिन्न राज्यों के विशेषज्ञों ने 50 भी अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किए। तकनीक, विज्ञान और कौशल जगत की विभूतियों ने इन विषयों को मातृभाषा में विकसित करने और पढ़ाने पर रणनीति तय की। उद्घाटन सत्र के मुख्यातिथि एवं विज्ञान भारती के

दीप प्रज्ज्वलन कर सम्मेलन का शुभारम्भ करते अतिथिगण।

राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ.शिव कुमार ने कहा कि कौशल विद्वता का प्रामणीकरण करता है। जिस भाषा में कौशल को समझने की सिद्धता है,उसी में उस कौशल को पढ़ाए जाने से मौलिकता आएगी। इसलिए हमें कौशल, तकनीक और विज्ञान को मातृभाषा में पढ़ाना चाहिए। समापन सत्र के मुख्यातिथि एवं मुख्यमंत्री के विशेष कर्तव्य अधिकारी डॉ.राज नेहरू ने कहा कि तकनीकी और कौशल शिक्षा देश व समाज के उत्थान में उपयोगी होनी चाहिए। हमारे पेटेंट सामाजिक और आर्थिकी को बदलने में सक्षम होने चाहिएं। यदि परिवर्तनकारी गतिशीलता हमारे व्यवहार में नहीं आएगी तो कौशल विकास संभव नहीं होगा। डॉ. राज नेहरू ने कहा कि देश की इकोनॉमी के विकास में इनोवेशन, स्टार्टअप और पेटेंट की बड़ी भूमिका है। इसमें विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों को अपना योगदान देना होगा।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रोफेसर दिनेश कुमार ने कहा कि कौशल, तकनीक और विज्ञान को अपनी मातृभषा में पढ़ाएंगे तो और श्रेष्ठ परिणाम सामने आएंगे। जापान, जर्मनी, फ्रांस और रूस जैसे देश इसका बहुत बड़ा जीवंत उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। इस अवसर पर बड़ी संख्या में अकादमिक जगत की हस्तियां मौजूद रहीं।